झाँसी की रानी

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत कविता 'झाँसी की रानी' भारत की विरांगना रानी लक्ष्मी बाई की वीर गाथा पर आधारित है। इसकी कवयित्री 'सुभद्रा कुमारी चौहान' जी है। रानी लक्ष्मी बाई ने देश को अंग्रेज़ों के अत्याचार से आज़ादी दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। सन् 1857 में सभी देश वासियों के मन में अंग्रेज़ी सरकार के खिलाफ आक्रोश भर चुका था। रानी लक्ष्मी बाई का बचपन भी इन्हीं परिस्थितियों के बीच बीता। एक योद्धा के सारे गुण उनमें विद्यमान थे। वह कानपुर के नाना साहब की मुँहबोली बहन थीं। बचपन में सब उन्हें छबीली के नाम से बुलाया करते थे। साधारण बच्चों की तरह खिलौने से खेलना उन्हें नहीं भाता था। उनके खेल-खिलौने और पसंद भी उन्हीं की तरह असाधारण थे। बरछी, ढ़ाल, कृपाल और कटारी यह सभी उनके प्रिय खिलौने थे। शिवाजी की वीर गाथाएँ सुनना उन्हें अत्यंत प्रिय था। इसी प्रकार वो बड़ी हुई। बड़े होने के बाद उनका विवाह झाँसी के राजा गंगाधर राव नेवालकर से हुआ। कुछ वर्ष पश्चात रानी ने एक बालक को जन्म दिया; परंतु कुछ समय बाद ही उस बालक की मृत्यु हो गई। ऐसी परिस्थिति में राजमहल में दुःख का वातावरण फैल गया। राजा बीमार रहने लगे। सब की सलाह मानकर रानी लक्ष्मीबाई ने राज्य के उत्तराधिकारी के तौर पर एक बालक को गोद लिया। परंतु अंग्रेज़ों ने उनका विरोध किया और अंग्रेज़ी शासन के नियम के अनुसार गोद लिए हुए पुत्र को राज्याधिकार से वंचित कर दिया। धीरे-धीरे रानी ने अपनी एक क्रान्तिकारी सेना का गठन किया और अंग्रेज़ों से युद्ध किया। वीरता पूर्वक लड़ते-लड़ते उन्हें वीरगति प्राप्त हुई। मर कर भी वो हम सब भारत वासियों को देश के लिए जीने की प्रेरणा दे गईं। सम्पूर्ण भारत उनके इस बलिदान का सदा आभारी रहेगा।

कविता की भाषा शैली -

(1) प्रस्तुत कविता की भाषा **खड़ी बोली हिंदी** है।

(2) **'को करने की', 'कृपाण कटारी' ', 'खेलना खूब', 'बजी बधाई', 'मुदित महलों', 'बनकर ब्रिटिश', 'रानी रोई रनीवासों ', 'विषम वेदना', 'सब सामान' , 'ज्योति जगानी ', 'स्मिथ सन्मुख ', 'मार मचाई '** में एक ही वर्ण की आवृति एक से अधिक से बार होने के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

(3) **'चुपके - चुपके '** में एक ही शब्द की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण यहाँ पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई की चारित्रिक विशेषताएँ -

(1) वीरांगना - झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई एक वीरांगना थी। उन्होंने देश की आज़ादी के लिए वीरता पूर्वक लड़ते-लड़ते अपने प्राणों का त्याग कर दिया।

(2) आत्म स्वाभिमानी - झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई में आत्म स्वाभीमान की भावना कूट-कूट कर भरी थी। उनका राज्य छल से छीनकर अंग्रेज़ों ने उनके स्वाभीमान पर प्रहार किया था जो उनके लिए असहनीय था।

(3) देशभक्त – बचपन से देशभक्त वीर महापुरुषों की कथाएँ सुन कर बड़ी हुई लक्ष्मीबाई के मन में देश के लिए प्रेम उत्पन्न होना स्वाभाविक था।

पाठ का उद्देश्य -

पाठ के माध्यम से कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान ने देश की एक विरांगना से हमारा परिचय कराया है। हमारे मन में देश तथा देशभक्तों के लिए सम्मान की भावना को जागृत करना ही कवयित्री का उद्देश्य है।

पाठ का संदेश -

कविता के माध्यम से कवयित्री ने हमें देश भक्ति का संदेश दिया है। हमारे मन में अपने देश के प्रति सम्मान की भावना होनी चाहिए।